चाँद और संघर्ष

संजीव मण्डल

1

चाँद चमकता है गुरूर में
अविराम
रोशनी उधार की
ग्रहण का सूरज
जलता है
पिछवाड़े श्याम के
कि पट्टी बन
आँखों की
भ्रम में डाले रहता है
क्रम में वह कहता है
शीतल रोशनी
देता है
कोमल फूल
फल रसीला
पेट भर अन्न
पर बात अन्य
गण्य-मान्य
प्रभु चाँद
महिमाशाली
गरिमाशाली
हम उसके छत के नीचे
भाग्यशाली

कि है रोशनी

आँख भर देखने को

और सूरज का अस्तित्व नहीं

जग में

कि वह है ही नहीं

कभी था ही नहीं

और न कभी होगा

जो ग्रहण है वह

युगों तक लंबा खींचा गया

पर कुछ पागल यह कहते हुए पाए गए

कि ग्रहण छटेगा

और बटेगा

असली रोशनी

हर के हिस्से

बराबर-बराबर

श्याम के पीछे से आता हुआ सूरज

क्या कमाल होगा

लाल होगा।

2

विवश अंधा आँखों का

कर देगा

खुली रोशनी

तेज जलता हुआ

सूरज जब कभी

ग्रहण से कालिख पोंछ निकलेगा।

बातें मीठी

निकलती हैं

अजीब तरह से जीभ लपेट

दलाल चाँद के मुख से

बराबर

तड़ातड़

शीतल सा चाँद

रोशनी शीतल

रोशनी पीतल

कटे गरदन का घाव भरना आता है

कि चाँद की रोशनी

तिलस्मी है

अंधेरा मुँह काली रात का

धो देता है

केवल

चाँद ही

और उसकी रोशनी

बड़ी दयालु

कि रात में भी तो वह देती है

रेटिना को वह शक्ति

जिससे हम ठोकर खाने से बचते हैं

पाँव-पाँव चल

आगे बढ़ते हैं

अपना काम सारा

चुटकी में करते हैं।

3

बिल में बिलबिला रहे हैं

गला फाड़ चिल्ला रहे हैं

बहरी है दुनिया

या मुँह में कपड़ा ठूसा है

चारों ओर शोर है

और मादा मोर है

कीचड़ है, कालिख है

कोई नौकर है, मालिक है

पूरा है चाँद

रोशनी पूरी है

झोपड़ी से उसकी

अनगिनत दूरी है

चाँद की रोशनी का

फोकस कहीं और है

माचिस के डिब्बे में

बंद लोगों का शोर है

पार्क में कर्फ्यु है

प्रश्न है क्यों है

गिने-चुने लोगों की मीटिंग है

जो कार से उतरते हैं

मखमल पर चलते हैं

जो चिल्लाते हैं विरुद्ध उनके

उनकी हत्या का षड्यंत्र है

तांत्रिक का

चाँद के

अजीब औ' गरीब मंत्र है
तानाशाही कहते है किसको
यहीं तो लोकतंत्र है
कबका मर गया हिटलर
पर फासिस्ट अब और हैं
उसका कमाण्डर है, कोर है
इस पर किसका गौर है।

4

सोलह साल की लड़की है
कई बार किया गया
उसके साथ
दिनों में रातों में
बातों-बातों में
बलात्कार, बलात्कार
चाँद की रोशनी के नीचे
यह बना चमत्कार
लड़की नाबालिग
उसके मुँह का कालिख
क्या कभी धो पायेगा
तिलस्मी रोशनी
चाँद की
चाँद का पूजारी
लाइसेंसधारी
कि है उसको अधिकार

हर बदमाशी करने का

चकला काशी एक करने का

खून के आँसू आँखों से नहीं

कहीं और से बहते हैं

दिल ही नहीं

उसका गात टूट गया

अभिमान टूट गया

मान टूट गया

मधुर सपनों का

जो वह गान गाती थी

वह गान टूट गया

जैसे सन् '47 को

भारत से पाकिस्तान टूट गया।

5

कीचड़ है, दलदल है

धँसे लोगों का हलचल है

कीचड़ गीला है

निकलने की

जद्दोजहद में थक गए हैं सभी

चेहरे का रंग पीला है

जोर लगाते हैं

धँसते चले जाते हैं

घुटनों का कीचड़

कमर तक आया है

कीचड़-कीचड़

सारी की सारी

काया है

चाँद के हाथ

विकल हैं छोटे हैं

उधार की रोशनी

यहीं उसका टोटल है

यहीं उसका खजाना है

यहीं उसका होटल है

जिसके पकवान ऊँचे दामों में

बिकते हैं

खोखले है अंदर से

पर लजीज दिखते हैं।

6

चाँद है अनेक रूपात्मक

कि भेस उसका

युगों-युगों से बदलता गया

डार्विन के विकासवाद का

सच्चा, शुद्ध, अच्छा

उदाहरण है वह

अपने को देवता बना

पूजन क्रिया लोगों से कराता है

शाप से लोगों को डराता है

उसमें कहाँ कोई आग है

जगह-जगह दाग है

प्रेयसी का चेहरा चाँद सा

यह क्या मजाक है

चंदा मामा

हाँ

कंस और शकुनी का बाप है

किसान का फसल खा

रुधिर का पान कर

चमक का गान कर

इतराता, घमण्ड से चलता चाँद

हरदम एक ही चेहरा दिखाता है

दूसरा चेहरा छिपाता है

कि कहीं

उसका जीभ से लार टपकाता

घिनौना मुँह हम देख न ले।

7

आकाश से चाँद

महाकर्षण को बना हथियार

पृथ्वी को

हरदम खींचता है

अपनी ओर

कि पृथ्वी से बना

वह पृथ्वी को ही

निगल जायेगा

लोहा उसकी शक्ति का

मान ले सभी

इसके बिना अब चारा नहीं

पहले सहलायेगा

गला-गलाकर

साँचे में ढालेगा

ढाँचे में ढालेगा

ढाल बनायेगा

तलवार बनाकर

किसी का काल बनायेगा

तंत्र करेगा, मंत्र पढ़ेगा

भविष्य का यंत्र गढ़ेगा

कि युद्ध के लिए तौयार है वह

काले-काले हथियारों का जखीरा

आज का एडवांस हथियार

पिस्तौल, बंदूक, गन

अणुबम, हाइड्रोजन बम

टैंक, फाइटर प्लेन

उसकी उँगली तले दबे

पुलिस, आर्मी मेन

धर्म से अलग

कर्म से अलग

करने की रेखा खींचना जानता है वह

किसी मकान के तहखाने में

बंद कर देगा वह

विरुद्ध उसके, सिर उठायेगा जो
छाती में लोहा उतार देगा
गुप्तांगों को झुलसा देगा
गरम लोहे की छड़ी से
आँखें निकाल लेगा
जरूर निकाल लेगा
गरदन की हड्डी
हथौड़े से तोड़ देगा
सिर पकड़ कर
जोर से मोड़ देगा
कि सिर हमेशा झुका रहे
पालतू कुत्ते सा
उसके आगे पीछे रुका रहे
औरतों की चोलियाँ खींच कर
अट्टहास करेगा
बकवास करेगा।

8

ग्रहण के पीछे से
सूरज निकले
साँस में साँस आए
जान में जान आए
हम यह मनाए
सूरज लाल हो
सबको थोड़ा-थोड़ा लाल मिले

गाँधी नहीं

हमें नेताजी

भगतसिंह काल मिले

लातों के भूत

बातों से नहीं मानते

माने या न माने

पर हम है जानते

कि पत्थर कभी पिघलते नहीं

चाँद में कोमलता नहीं

आर्द्रता नहीं

उसमें फूल नहीं खिलते

घास नहीं उगते

तृष्णा से चक्कर आए

उसकी कठोरता भुगते

घाव-घाव शरीर सारा

भयंकरता से दुखते

सूरज की रोशनी

चमके और दमके

चाँद मिट सकता है

आँखों में आँसू नहीं

अंगारे हो

हथियारों के सहारे हो

मीनारें हो।